जैन दर्शन

(1) द्रव्य (Substance) – (9)
गुण + कर्म का आश्रय

द्रव्य की परिभाषा –
"क्रिया-गुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्"
अर्थात
→ द्रव्य वह है जो गुण तथा कर्म का आश्रय हो और अपने कार्यों का समवायी कारण (उपादान-कारण) हो। Ex: –
कपड़े के लिए सूत समवायी/उपादान कारण है।

विभु – सर्वव्यापी

द्रव्य की विशेषता: –
द्रव्य स्वतंत्र सत्ता है
गुण और कर्म का आश्रययुक्त तत्व है
अपने कार्यों का समवायी या उपादान कारण है
द्रव्य स्वरूपतः नित्य, स्वतंत्र एवं विशेषयुक्त है।
पर विभु या अणुरूप है।

द्रव्य कारण रूप - नित्य, कार्य रूप - अनित्य

* द्रव्य की संख्या नौ (9) है जिसमें जड़ एवं चेतन दोनों सम्मिलित हैं: –

(1) पृथ्वी
(2) जल
(3) वायु
(4) अग्नि
(5) आकाश

(मूलतत्व में निरवयवात्मक हैं)
पंचभूत (Five Physical elements)
इनके गुण क्रमशः: गन्ध, [struck] रस, स्पर्श, रूप, शब्द

(6) दिक्
(7) काल
(8) आत्मा → जीवात्मा अनेक, परमात्मा / ईश्वर
(9) मन

* गुण (Quality) : (24)

→ गुण स्वतंत्र नहीं द्रव्य आश्रित होता है।
→ गुण के अन्तर्गत भौतिक एवं मानस दोनों प्रकार के गुण आते हैं।
→ कणाद ने गुणों की संख्या सत्रह (17) बताई पर प्रशस्तपाद ने इसमें सात (7) और जोड़ कर गुणों की संख्या चौबीस (24) कर दी है।

1 रूप, 2 रस, 3 गंध, 4 स्पर्श, 5 शब्द, 6 संख्या, 7 परिमाण, 8 पृथक्त्व, 9 संयोग, 10 विभाग, 11 [struck] परत्व 12 अपरत्व 13 बुद्धि 14 सुख 15 दुःख 16 इच्छा 17 प्रयत्न 18 गुरुत्व 19 द्रवत्व 20 स्नेह 21 संस्कार 22 धर्म, 23 अधर्म 24 द्वेष

* कर्म (Action) (5)

कर्म का आधार द्रव्य है, पर गुण से भिन्न है।

कर्म: — (1) जो द्रव्य में आश्रित है (2) जो गुण से भिन्न है (3) संयोग विभाग का कारण ...

कर्म पाँच प्रकार के होते हैं:

(1) उत्क्षेपण (ऊपर फेंकना)
(2) अपक्षेपण (नीचे फेंकना)
(3) आकुंचन (सिकोड़ना)
(4) प्रसारण (फैलाना)
(5) गमन (चलना)

* सामान्य (Universality or Generality)

→ सामान्य वह पदार्थ है जिसके कारण एक ही जाति के अन्दर प्रकार के विभिन्न व्यक्तियों को एक जाना जाता है। Ex —
मनुष्यत्व या गोत्व जाति।

- सामान्य नित्य, एक, अनेकानुगत है।

सामान्य के सम्बन्ध में तीन मत हैं: —

(1) नामवाद / अपोहवाद / बौद्ध
(2) प्रत्ययवाद — जैन + वेदान्त
(3) वस्तुवाद — न्याय + वैशेषिक

* सामान्य के तीन भेद होते हैं: —

(1) पर - सबसे बड़ा, Ex - सत्ता Being-hood
(2) अपर - सबसे छोटा Ex - घटत्व Potness
(3) परापर - मध्यम Ex - द्रव्यत्व Substantiality

(i) पर सामान्य संसार की प्रत्येक वस्तु में सर्वाधिक व्यापक सामान्य है जिसके अन्तर्गत अस्तित्व या सत्ता को सम्मिलित किया जाता है क्योंकि संसार की प्रत्येक वस्तु सत् है। अतः यह सबसे बड़ा सामान्य है।
(ii) अपर: इसे निम्नतर सामान्य भी कहा जाता है क्योंकि यह सबसे छोटा होता है। Ex - गोत्व, मनुष्यत्व, घटत्व इत्यादि।
(iii) पर-अपर: जिसकी व्यापकता पर से कम तथा अपर से ज्यादा होती है।

* विशेष (Particularity) — इसे 'विशेष' कहा जाता है।

एक ही प्रकार के परमाणुओं का विभेदक 'विशेष' कहलाता है। 'विशेष' का अर्थ

→ विशेष सामान्य का उल्टा है। जो नित्य है 'व्यावर्तक' अर्थात् विशेष है। जो नित्य द्रव्यों - दिक्, काल, आकाश, आत्मा, मन और परमाणुओं में रहते हैं।

→ विशेष के कारण एक परमाणु दूसरे परमाणु से भिन्न होता है। विशेषों की संख्या अनन्त है।

→ विशेष, नित्य द्रव्यों में रहने के कारण विशेष भी नित्य, अनन्त और अगोचर है।

* समवाय (Inherence) नित्य अयुतसिद्ध संबंध है।

समवाय एक प्रकार का सम्बन्ध है। समवाय एक प्रकार का सम्बन्ध है जिसके कारण दो पदार्थ

→ समवाय का संबंध है जिसके कारण दो पदार्थ एक दूसरे में समवेत रहते हैं।

→ यह सम्बन्ध अयुतसिद्ध वस्तुओं के बीच होता है।

→ अयुतसिद्ध वस्तुएँ वे हैं जिनका पृथक् अस्तित्व नहीं हो सकता। Ex- अवयव और अवयवी के बीच का संबंध

→ द्रव्य एवं गुण में, द्रव्य एवं कर्म में, सामान्य एवं व्यक्ति में, नित्य द्रव्य एवं विशेष में समवाय संबंध पाया जाता है।

(हाशिये में: सम्बन्ध दो प्रकार के होते हैं — (i) संयोग — अनित्य सम्बन्ध (ii) समवाय — नित्य सम्बन्ध)

* अभाव (Non-Existence) — अभाव किसी वस्तु का न होना कहलाता है।

अभाव

- संसर्गाभाव (संबंध का अभाव)
  - प्रागभाव
  - ध्वंसाभाव
  - अत्यन्ताभाव — त्रैकालिक अभाव Ex- वायु में रूप का अभाव
- अन्योन्याभाव (तादात्म्य का अभाव)

→ संसर्गाभाव - दो वस्तुओं के सम्बन्ध के अभाव Ex- जल में अग्नि का अभाव।

→ अत्यन्ताभाव - दो वस्तुओं के सम्बन्ध का अभाव जो भूत, वर्तमान एवं भविष्य में रहता हो Ex- वायु में रूप का अभाव

→ प्रागभाव - उत्पत्ति के पूर्व कार्य का अपने कारण में अभाव Ex- मिट्टी में घड़े का अभाव

→ ध्वंसाभाव - विनाश के बाद किसी चीज का अभाव Ex- घड़े टूटने पर ठीकरों में घड़े का अभाव

→ अन्योन्याभाव - दो वस्तुओं की भिन्नता Ex- घोड़ा गाय नहीं।

* वैशेषिक दर्शन एवं न्याय दर्शन दोनों समानतंत्र हैं।
दोनों का उद्देश्य एक ही है अर्थात् जीवन का मोक्ष। दोनों के अनुसार समस्त दुःखों का मूल कारण अज्ञान है, इन दुःखों की आत्यन्तिक-निवृत्ति ही मोक्ष है और जिसकी प्राप्ति पदार्थों "तत्त्वज्ञान" से ही सकती है।

→ मुक्ति / अपवर्ग को लेकर दोनों में समानता है।

विभिन्नता: ---

(1) न्याय - ज्ञान के साधन 'चार' प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान को मानते हैं।
जबकि वैशेषिक सिर्फ ज्ञान के साधन 'दो' - प्रत्यक्ष और अनुमान को मानते हैं।
उपमान और शब्द इन दोनों को अनुमान के अन्तर्गत ही मानते हैं।

(2) न्याय - पदार्थों की संख्या - 'सोलह' मानते हैं जबकि
वैशेषिक " " " 'सात' मानते हैं।

* असत्-कार्यवाद / परमाणुकारणवाद / कारणता / आरम्भवाद

कारणता सिद्धांत के रूप में सांख्य जहाँ सत्कार्यवाद को मानता है, ठीक उसके विपरीत न्याय-वैशेषिक असत्-कार्यवाद को मानते हैं।
क्योंकि
: कार्य उत्पत्ति के पूर्व असत् है, वह अपने कारण में विद्यमान नहीं रहता। कार्य नई उत्पत्ति है, जिसका अस्तित्व है और उत्पत्ति से ही उसकी सत्ता का आरम्भ होता है।

→ वैशेषिक परमाणुओं को जगत कारण मानते हैं।
→ इस जगत की सभी भौतिक पदार्थ सावयव और उत्पत्ति-विनाशशील हैं तथा नित्य परमाणुओं के विभिन्न संयोगों से बनते हैं। जैसे: ---

परमाणुवाद / पदार्थों की उत्पत्ति का अर्थ है - परमाणु संयोग और विनाश का अर्थ है - परमाणु-संयोग - विभाग।
→ सृष्टि के मूल तत्व 'परमाणु' नित्य हैं।

Kajal